2.2

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।।१९।।

यः=जो; **एनम्**=इस आत्मा को; **वेत्ति**=जानता है; **हन्तारम्**=मारने वाला; **यः**=जो; **च**=तथा; **एनम्**=इसे; **मन्यते**=मानता है; **हतम्**=मरा; **उभौ**=दोनों ही; **तौ**=वे; **न**=नहीं; **विजानीतः**=जानते; **न**=न; **अयम्**=यह; **हन्ति**=मारता है; **न**=नहीं; **हन्यते**=मारा जाता है।

अनुवाद

जो इस आत्मा को मारने वाला मानता है, और जो इसे मरा हुआ समझता है, वे दोनों ही अज्ञानी हैं। यथार्थ ज्ञानी जानता है कि यह आत्मा न तो मारता है और न ही कभी मारा जाता है।।१९।।

तात्पर्य

देह पर किसी घातक शस्त्र का आघात होने पर भी देह में बद्ध जीवात्मा की मृत्यु नहीं होती। जैसा पूर्व श्लोकों में सिद्ध किया जा चुका है, जीवात्मा इतना सूक्ष्म है कि किसी भी प्राकृत शस्त्र से उसका वध नहीं किया जा सकता। अपने अप्राकृत स्वरूप के कारण जीवात्मा अवध्य है। मृत्यु तो केवल देह की ही होती है। किन्तु इसका तात्पर्य देहहिंसा को प्रोत्साहित करना नहीं है। वैदिक निर्देश है, **माहिंस्यात् सर्वभूतानि**, 'किसी भी जीव की हिंसा कभी न करे।' आत्मा अवध्य है, इसका यह अर्थ नहीं कि पशुहिंसा की जाय। किसी भी जीवदेह की अनाधिकार हत्या करना निंद्य है एवं राज्य और भगवत्-विधान के अनुसार दण्डनीय भी है। परन्तु अर्जुन को तो वध में धर्म के उद्देश्य से नियुक्त किया जा रहा है, स्वच्छन्दतापूर्वक नहीं।

2.2

न जायते म्रियते वा कदाचिन्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।२०।।

न=नहीं; **अयम्**=यह; **भूत्वा**=होकर; **भविता**=होने वाला है; **वा**=अथवा; **न**=नहीं; **भूयः**=फिर; **अजः**=अजन्मा; **नित्यः**=नित्य; **शाश्वतः**=सनातन; **अयम्**=यह; **पुराणः**=प्राचीनतम; **न**=नहीं; **हन्यते**=मरता; **हन्यमाने**=मारे जाने पर भी; **शरीरे**=देह के।

अनुवाद

आत्मा किसी भी काल में न तो जन्मता है और न मरता ही है। तथा एक बार होकर यह कभी नष्ट भी नहीं होता। यह नित्य, अजन्मा, शाश्वत् और पुरातन है। देह के मारे जाने पर भी आत्मा नहीं मारा जाता।।२०।।